अथर्ववेद

काण्ड ३

सूक्त ३०

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Atharvaveda

Kaaṇḍa 3
Sookta 30

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

साराँश

इस सूक्त में ईश्वर अथर्वा ऋषि के माध्यम से घरेलु और सामाजिक सौहार्द बनाने की आज्ञा देते हैं। एक पहिए के अरों की भांति सबको मिलजुल कर एक ध्येय के लिए कार्य करना चाहिए। सब अपने गुणों और सामर्थ्य के अनुसार अपने हिस्से का काम पूरे मनोयोग से करें। समाज में छुआ छूत, जाति आदि के भेदभाव का कोई स्थान नहीं। सब मिलजुल एक जैसा भोजन करें। जल के स्रोतों पर सबका समान अधिकार हो। मिलजुल कर भोजन व उपासना करने वाला परिवार ही एकजुट हो समस्याओं का सामना कर पाता है।

प्रथम मन्त्र में ऋषि ईश्वर की ओर से सामाजिक सौहार्द का उपदेश देते हैं।

अथर्वा ऋषिः। सांमनस्यं देवता। ३२ अक्षराणि। आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥१॥ अथर्व ३:६:३०:१

सऽहृदयम्। साम्ऽमनस्यम्। अविऽद्वेषम्। कृणोमि। वः॥
अन्यः। अन्यम्। अभि। हर्यत। वत्सम्। जातम्ऽइव। अघ्न्या॥१॥

मैं (*वः*) **तुम सबके लिए** (*सऽहृदयम्*) **समान भावनाओं,** (*साम्ऽमनस्यम्*) **समान विचारधारा वाला हो** (*अविऽद्वेषम्*) **द्वेष वैरादि से मुक्त होने का उपदेश** (*कृणोमि*) **करता हूँ।** (*इव*) **जैसे एक** (*अघ्न्या*) **गाय अपने** (*जातम्*) **नवजात** (*वत्सम्*) **बछड़े को चाहती है वैसे ही तुम भी** (*अभि*) **सब ओर** (*अन्यः*)(*अन्यम्*) **एक दूसरे को** (*हर्यत*) **चाहो।**

दूसरे मन्त्र में ऋषि माता-पिता व सन्तान, पति व पत्नी के बीच सौहार्द का उपदेश देते हैं।

अथर्वा ऋषिः। सांमनस्यं देवता। ३२ अक्षराणि। आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम् ॥२॥ अथर्व ३:६:३०:२

अनुऽव्रतः। पितुः। पुत्रः। मात्रा। भवतु। सम्ऽमनाः॥
जाया। पत्ये। मधुऽमतीम्। वाचम्। वदतु। शन्तिऽवाम्॥२॥

Synopsis

In this composition through Sage Atharvaa God orders us to maintain harmony in our homes as well as in the society. Like the spokes connect the hub of a wheel to its rim, everyone should work together for a common purpose. Everyone should diligently perform their duties to the best of their capabilities. There is no place in society for segregation based on caste etc. People should eat together and enjoy the same nourishments. Everyone has equal rights and access to the sources of water. Members of a family that prays and eats together can collectively weather any storm.

In the first mantra the sage on behalf of God preaches about the harmony in the society.
ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataa** saammanasyam, **vowels** 32, **chhandaḥ** aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

1. **sahṛidayan saammanasyamavidveṣhaṅ kṛiṇomi vaḥ,**
   anyo anyamabhi haryata vatsañ jaatamivaaghnyaa. Atharva 3:6:30:1

sa-hṛidayam saam-manasyam avi-dveṣham kṛiṇomi vaḥ,
anyaḥ anyam abhi haryata vatsam jaatam-iva aghnyaa.

I (*kṛiṇomi*) **proclaim that** (*vaḥ*) **you should all have** (*sa-hṛidayam*) **similar feelings,** (*saam*) **similar** (*manasyam*) **mindsets and** (*avi*)(*dveṣham*) **be free from jealousy and animosity towards each other.** (*iva*) **As** (*aghnyaa*) **a cow loves its** (*jaatam*) **newborn** (*vatsam*) **calf, so should all of you** (*haryata*) **long** (*anyaḥ*)(*anyam*) **for each other** (*abhi*) **in all directions.**

In the second mantra the sage preaches about the harmony in the parental and spousal relationships.
ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataa** saammanasyam, **vowels** 32, **chhandaḥ** aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

2. **anuvrataḥ pituḥ putro maatraa bhavatu sammanaaḥ,**
   jaayaa patye madhumateem vaacham vadatu shantivaam. Atharva 3:6:30:2

anu-vrataḥ pituḥ putraḥ maatraa bhavatu sam-manaaḥ,
jaayaa patye madhu-mateem vaacham vadatu shanti-vaam.

पिता अपनी सन्तान को धर्मानुसार आचरण सिखा अपना कर्त्तव्य निभाएं और (*पुत्रः*) **सन्तान** (*पितुः*) **पिता की सीख के** (*अनुऽव्रतः*) **अनुसार व्यवहार करें। सन्तान के विचार** (*मात्रा*) **माता के** (*सम्ऽमनाः*) **मन के अनुकूल** (*भवतु*) **हों।** (*जाया*) **पत्नी** (*पत्ये*) **पति के लिए और पति पत्नी के लिए** (*शन्तिऽवाम्*) **मन को शान्त करने वाले** (*मधुऽमतीम्*) **मधुर** (*वाचम्*) **वचन** (*वदतु*) **बोले।**

तीसरे मन्त्र में ऋषि भाई बहनों में सौहार्द का उपदेश देते हैं।

अथर्वा ऋषिः। सांमनस्यं देवता। ३२ अक्षराणि। आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।

सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ॥३॥ अथर्व ३:६:३०:३

मा। भ्राता। भ्रातरम्। द्विक्षत्। मा। स्वसारम्। उत। स्वसा॥

सम्यञ्चः। सऽव्रताः। भूत्वा। वाचम्। वदत। भद्रया॥३॥

(*भ्राता*) **भाई** (*भ्रातरम्*) **भाई के प्रति** (*द्विक्षत्*) **ईर्ष्या, द्वेष और बैर का भाव** (*मा*) **न रखें** (*उत*) **और** (*स्वसा*) **बहन भी** (*स्वसारम्*) **बहन के प्रति ऐसे भाव मन में** (*मा*) **न लाएं। सब** (*सम्यञ्चः*) **उत्तम व्यवहार और** (*सऽव्रताः*) **समान कर्मों वाले** (*भूत्वा*) **होकर एक दूसरे के साथ** (*भद्रया*) **भद्रता पूर्वक** (*वाचम्*) **अच्छे बोल** (*वदत*) **बोलें।**

चौथे मन्त्र में ऋषि सौहार्द के लिए वेदों के पठन पाठन का उपदेश देते हैं।

अथर्वा ऋषिः। सांमनस्यं देवता। ३१ अक्षराणि। निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः।

तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः ॥४॥ अथर्व ३:६:३०:४

येन। देवाः। न। विऽयन्ति। नो इति। च। विऽद्विषते। मिथः॥

तत्। कृण्मः। ब्रह्म। वः। गृहे। सम्ऽज्ञानम्। पुरुषेभ्यः॥४॥

(*येन*) **जिस का पालन कर** (*देवाः*) **विद्वान् एक दूसरे के** (*विऽयन्ति*) **विरोधी** (*न*) **नहीं होते** (*च*) **और** (*नो*) **न ही** (*मिथः*) **एक दूसरे से** (*विऽद्विषते*) **द्वेष करते हैं, जो** (*पुरुषेभ्यः*) **सभी मनुष्यों के लिए** (*सम्ऽज्ञानम्*) **जीवन सम्बन्धी यथार्थ ज्ञान देता है,** (*तत्*) **उस** (*ब्रह्म*) **ब्रह्म ज्ञान (वेद)** (*वः*) **का तुम्हारे** (*गृहे*) **धरों में** (*कृण्मः*) **नियम करते हैं।**

All of (*pituḥ*) **the fathers should fulfill their duty of teaching proper discipline and conduct as per dharma** (*putraḥ*) **to their children and children should diligently learn and** (*vrataḥ*) **behave** (*anu*) **accordingly. The children's** (*manaaḥ*) **minds** (*bhavatu*) **should be** (*sam*) **aligned** (*maatraa*) **with their mothers' minds.** (*jaayaa*) **Wives** (*vadatu*) **should talk** (*patye*) **to their husbands with a** (*shanti*)(*vaam*) **calming and** (*madhu*)(*mateem*) **sweet** (*vaacham*) **voice and so should the husbands talk to their wives.**

In the third mantra the sage preaches about the harmony between siblings.
ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataa** saammanasyam, **vowels** 32, **chhandaḥ** aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

3. maa bhraataa bhraataran dvikṣhanmaa svasaaramuta svasaa,
samyañchaḥ savrataa bhootvaa vaacham vadata bhadrayaa. Atharva 3:6:30:3

maa bhraataa bhraataram dvikṣhat maa svasaaram uta svasaa,
samyañchaḥ savrataaḥ bhootvaa vaacham vadata bhadrayaa.

(*bhraataa*) **Brothers should have** (*maa*) **no** (*dvikṣhat*) **jealousy or animosity** (*bhraataram*) **towards their brothers** (*uta*) **and so should** (*svasaa*) **the sisters have** (*maa*) **no ill feelings** (*svasaaram*) **towards sisters. Everyone** (*bhootvaa*) **should** (*samyañchaḥ*) **engage in their best behaviors,** (*vaacham*)(*vadata*) **speak to each other** (*bhadrayaa*) **courteously and** (*savrataaḥ*) **work together.**

In the fourth mantra the sage preaches about the utility of the Vedas in maintaining harmony in the society.
ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataa** saammanasyam, **vowels** 31, **chhandaḥ** nichṛid aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

4. yena devaa na viyanti no cha vidviṣhate mithaḥ,
tatkṛiṇmo brahma vo gṛihe sañjñaanam puruṣhebhyaḥ. Atharva 3:6:30:4

yena devaaḥ na vi-yanti no cha vi-dviṣhate mithaḥ,
tat kṛiṇmaḥ brahma vaḥ gṛihe sam-jñaanam puruṣhebhyaḥ.

(*yena*) **By following Vedas,** (*devaaḥ*) **the scholars** (*na*) **neither** (*vi*)(*yanti*) **get into conflict with each other** (*no*)(*cha*) **nor develop any kind of** (*vi*)(*dviṣhate*) **jealousy or animosity** (*mithaḥ*) **towards each other; It provides** (*sam*)(*jñaanam*) **factual knowledge** (*puruṣhebhyaḥ*) **to all human beings;** (*kṛiṇmaḥ*) **I proclaim that in** (*vaḥ*) **your** (*gṛihe*) **homes there should be a rule of the studies of** (*tat*) **that** (*brahma*) **supreme knowledge contained in the Vedas.**

पाँचवे मन्त्र में ऋषि पुनः मिलकर काम करने और मधुर बोलने पर जोर देते हैं।

अथर्वा ऋषिः। सांमनस्यं देवता। ४६ अक्षराणि। विराडार्षी जगती छन्दः। निषादः स्वरः।

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः।

अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान्वः संमनसस्कृणोमि ॥५॥ अथर्व ३:६:३०:५

ज्यायस्वन्तः। चित्तिनः। मा। वि। यौष्ट। सम्ऽराधयन्तः। सऽधुराः। चरन्तः॥

अन्यः। अन्यस्मै। वल्गु। वदन्तः। आ। इत। सध्रीचीनान्। वः। सम्ऽमनसः। कृणोमि ॥५॥

(*ज्यायस्वन्तः*) **बड़ो की आज्ञा का सम्मान करते हुए, अपने अपने** (*चित्तिनः*) **कर्त्तव्यों में चित्त लगाकर, योग्यतानुसार** (*सऽधुराः*) **समान कार्यभार वहन कर,** (*सम्ऽराधयन्तः*) **मिलकर सब कार्यों को सिद्ध** (*चरन्तः*) **करते हुए, कभी भी** (*वि*)(*यौष्ट*) **परस्पर विरोध करने वाले** (*मा*) **न होओ।** (*अन्यः*)(*अन्यस्मै*) **एक दूसरे के लिए** (*वल्गु*) **मधुर व प्रिय वचन** (*आ*)(*इत*)(*वदन्तः*) **बोलते हुए रहो। मैं** (*वः*) **तुम्हे** (*सम्ऽमनसः*) **एक विचारधारा वाले मनों के साथ** (*सध्रीचीनान्*) **मिलकर काम करनेवाले बनने का उपदेश** (*कृणोमि*) **करता हूँ।**

छठे मन्त्र में ऋषि सबको मिलकर भोजन और उपासना करने का उपदेश देते हैं।

अथर्वा ऋषिः। सांमनस्यं देवता। ३७ अक्षराणि। भुरिगार्षी बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः।

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।

सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः ॥६॥ अथर्व ३:६:३०:६

समानी। प्रऽपा। सह। वः। अन्नऽभागः। समाने। योक्त्रे। सह। वः। युनज्मि॥

सम्यञ्चः। अग्निम्। सपर्यत। अराः। नाभिम्ऽइव। अभितः ॥६॥

(*वः*) **तुम्हारा** (*प्रऽपा*) **जल का स्रोत** (*समानी*) **एक हो और** (*अन्नऽभागः*) **अन्न भी** (*सह*) **साथ साथ भोगो।** (*समाने*) **एक ही** (*योक्त्रे*) **जोते में** (*वः*) **तुमको मैं एक** (*सह*) **साथ** (*युनज्मि*) **बान्धता हूँ। एक पहिए के** (*नाभिम्ऽइव*) **धुरी के** (*अभितः*) **चारों ओर लगे** (*अराः*) **अरों की भांति तुम सब भी मिलकर** (*सम्यञ्चः*) **उत्तम व्यवहार वाले बन** (*अग्निम्*) **अग्निहोत्र में आहुति दे** (*सपर्यत*) **उपासना करो।**

In the fifth mantra the sage again emphasizes on working together and talking to each other courteously.
ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataa** saammanasyam, **vowels** 46, **chhandaḥ** viraaḍ aarṣhee jagatee, **svaraḥ** niṣhaadaḥ.

5. jyaayasvantashchittino maa vi yauṣhṭa saṇraadhayantaḥ sadhuraashcharantaḥ,
anyo anyasmai valgu vadanta eta sadhreecheenaanvaḥ sammanasaskṛiṇomi. Atharva 3:6:30:5

jyaayasvantaḥ chittinaḥ maa vi yauṣhṭa sam-raadhayantaḥ sa-dhuraaḥ charantaḥ,
anyaḥ anyasmai valgu vadantaḥ aa ita sadhreecheenaan vaḥ sam-manasaḥ kṛiṇomi.

Be the one who (*jyaayasvantaḥ*) **respects the opinions of the elders,** (*sa*)(*dhuraaḥ*) **contributes equally, fulfills one's duties** (*chittinaḥ*) **diligently to the best of one's abilities,** (*charantaḥ*) **works** (*sam*)(*raadhayantaḥ*) **together in a team and** (*maa*) **never goes** (*vi*)(*yauṣhṭa*) **against the team.** (*vadantaḥ*) **Speak** (*valgu*) **sweetly and courteously** (*anyaḥ*)(*anyasmai*) **towards each other.** (*kṛiṇomi*) **I implore** (*vaḥ*) **you** (*aa*)(*ita*)(*sadhreecheenaan*) **to work together** (*sam*)(*manasaḥ*) **with a similar mindset.**

In the sixth mantra the sage preaches everyone to eat and pray together.
ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataa** saammanasyam, **vowels** 37, **chhandaḥ** bhurig aarṣhee bṛihatee, **svaraḥ** madhyamaḥ.

6. samaanee prapaa saha vo'nnabhaagaḥ samaane yoktre saha vo yunajmi,
samyañcho'gnin saparyataaraa naabhimivaabhitaḥ. Atharva 3:6:30:6

samaanee pra-paa saha vaḥ anna-bhaagaḥ samaane yoktre saha vaḥ yunajmi,
samyañchaḥ agnim saparyata araaḥ naabhim-iva abhitaḥ.

(*vaḥ*) **Your** (*pra-paa*) **water sources should be** (*samaanee*) **equally accessible to everyone. You should share and enjoy your** (*anna-bhaagaḥ*) **food** (*saha*) **together.** (*yunajmi*) **I unite** (*vaḥ*) **you** (*saha*) **together** (*yoktre*) **by binding you** (*samaane*) **to the same goal.** (*iva*) **As** (*araaḥ*) **the spokes of a wheel join its** (*naabhim*) **hub to its rim** (*abhitaḥ*) **in all directions, all of you should** (*samyañchaḥ*) **engage in your best behaviors and** (*saparyata*) **pray together while** (*agnim*) **making offerings in yajña.**

सातवे मन्त्र में ऋषि हर समय सौहार्द बनाये रखने का उपदेश देते हैं।

अथर्वा ऋषिः। सांमनस्यं देवता। ४३ अक्षराणि। निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

सध्रीचीनान्वः संमनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्त्संवननेन सर्वान्।

देवा इवामृतं रक्षमाणाः सायंप्रातः सौमनसो वो अस्तु ॥७॥ अथर्व ३:६:३०:७

सध्रीचीनान्। वः। सम्ऽमनसः। कृणोमि। एकऽश्नुष्टीन्। सम्ऽवननेन। सर्वान्॥

देवाःऽइव। अमृतम्। रक्षमाणाः। सायम्ऽप्रातः। सौमनसः। वः। अस्तु॥७॥

मैं (*वः*) **तुम्हारे लिए** (*सम्ऽमनसः*) **एक समान विचारधारा के साथ** (*सध्रीचीनान्*) **मिलकर काम करने वाले बनने का उपदेश** (*कृणोमि*) **करता हूँ।** (*सम्ऽवननेन*) **मिलकर सहमति के साथ** (*सर्वान्*) **सबको** (*एकऽश्नुष्टीन्*) **एक जैसा भोजन कराओ।** (*देवाःऽइव*) **जैसे इन्द्रियाँ मिलकर** (*अमृतम्*) **आत्मा को ज्ञान पहुँचाकर जीव की** (*रक्षमाणाः*) **रक्षा करने वाली होती हैं वैसे ही** (*सायम्ऽप्रातः*) **प्रातःकाल से सायंकाल तक और सायंकाल से प्रातःकाल तक** (*वः*) **तुम सब** (*सौमनसः*) **परस्पर आदर और प्रेम के साथ मिलकर अपने घर और समाज की रक्षा करने वाले** (*अस्तु*) **होओ।**

In the seventh mantra the sage advises to maintain harmony at all times.
ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataa** saammanasyam, **vowels** 43, **chhandaḥ** nichṛid aarṣhee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

7. sadhreecheenaanvaḥ sammanasaskṛiṇomyekashnuṣhṭeentsamvananena sarvaan, devaa ivaamṛitaṇ rakṣhamaaṇaaḥ saayampraataḥ saumanaso vo astu. Atharva 3:6:30:7

sadhreecheenaan vaḥ sam-manasaḥ kṛiṇomi eka-shnuṣhṭeen sam-vananena sarvaan,
devaaḥ iva amṛitam rakṣhamaaṇaaḥ saayam-praataḥ saumanasaḥ vaḥ astu.

(*kṛiṇomi*) **I proclaim** (*vaḥ*) **you to** (*sadhreecheenaan*) **work together** (*sam*)(*manasaḥ*) **with a similar mindset.** (*sam*)(*vananena*) **Together with consensus provide** (*eka*)(*shnuṣhṭeen*) **equal nourishment** (*sarvaan*) **for everyone.** (*rakṣhamaaṇaaḥ*) **For the protection of the living being,** (*devaaḥ*) **the senses act together in getting information to the mind and** (*amṛitam*) **the soul,** (*iva*) **similarly** (*vaḥ*) **you** (*astu*) **should work together** (*praataḥ*) **day and** (*saayam*) **night** (*saumanasaḥ*) **with mutual love and respect for the protection of your homes and the society.**